Paper Id:- 23/-6-6/INNO/7/2021/14572

भारतीय सामाजिक जीवन पर कोविड -19 के प्रभाव

Impact of Covid-19 on Indian Social Life

Paper Submission: 00/00/2021, Date of Acceptance: 00/00/2021, Date of Publication: 00/00/2021

विजय चौहान
प्राचार्य,
राजीव लोचनाचार्य
महाविद्यालय, खुरई,
सागर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

कोविड -19 के वैश्विक महामारी की अचानक शुरूआत से भारतीय समाज के जीवन पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता और सुरक्षाकर्मी दिन-रात काम करके थक चुके है । कुछ स्वास्थ्य कर्मी एवं पुलिस कर्मियों की जान चली गई है। उद्योग बंद होने से बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हो गई है, हालाकि देश की केन्द्र। व राज्य सरकारें कोरोना के प्रसार को रोकने की कोशिश कर रही है, लेकिन लॉकडाउन के कारण देश में रोजगार, स्वास्थ्य और शिक्षा पर विपरीत प्रभाव पड़ा है। देश में प्रवासी मजदूरों की वापसी लंबे समय से थी। हमारे देश में लगभग 12.5 करोड़ प्रवासी मजदूर है लाकडाउन के कारण इन मजदूरो के लिए भोजन, वस्त्र व निवास को लेकर समस्याये उत्पनन्न हो गई सुप्रीम कोर्ट ने केन्द्र व राज्य सरकारों का 9 जून 2020 को 15 दिनों के भीतर प्रवासी मजदूरों के रहने की व्यवस्था और उन श्रमिकों को रोजगार प्रदान करने के निर्देश दिये। पूरे देश को इस कोरोना काल में स्वास्थ्य संबंधी परिणाम भुगतने पडे। हालाकि कोरोना संक्रमण फेलने के कारण पूरा शिक्षा क्षेत्र ध्वस्त हो गया ।

The Sudden onset of the global pandemic of covid -19 has had a devastating impact on the lives of Indian Society. Health Workers and Security personnel are tired of working day and night some health workers and police personnel have lost their lives. the problem of unemployment has arisen due to the closure of the industry, although the central and state governments of the country are trying to stop the spread of corona, but due to the Lockdown, employment in the country. Health and education have been adversely affected. The return of migrant labourers to the country was long overdue. There are about 12.5 crore migrant labourers in our country. Due to the lockdown problems arose for these labourers regarding food, clothing and residence, the supreme court on 9 june 2020 directed the central and state governments to make arrangements for the accommodation of migrant labourers and provide employment to those workers within 15 days .The whole country had to face health –related consequences during this corona period. However, due to the spread of corona infection, the entire education sector collapsed.

मुख्य शब्द : भारतीय सामाजिक जीवन, कोविड-19, तालेबंदी, प्रवासी मजदूर, रोजगार।

Indian social life, covid-19, Lockdown, Migrant Labour, employment..

प्रस्तावना

कोविड-19 के वैश्विक महामारी की अचानक शुरूआत से भारतीय समाज के जीवन पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा है। परिणाम स्वारूप न केवल भारत में बल्कि विश्व में भी मानव और दैनिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षिक और स्वास्थ्य प्रणलियों को हिला दिया है। इन सभी क्षेत्रों को कोविड-19 की पृष्ठभूमि के खिलाफ पुननिर्माण करना होगा। इस पृष्ठभूमि के खिलाफ कुछ कम्पनियों ने अपने मूल उत्पादों को बंद करके स्वास्थ्य संबधी उत्पादो का निर्माण शुरू कर दिया है। लोग तालाबंदी से तंग आ चुके है बच्चे, युवा और वरिष्ठ नागरिक घर पर घुट रहे है । सभी व्यक्तियों का मानसिक स्वास्थ्य बिगड चुका है। कमोबेश हर कोई डरा हुआ है। वरिष्ठ नागरिकों की शारिरिक थकान ने उनके मानसिक स्वास्थ्य को अधिक प्रभावित किया है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता और सुरक्षाकर्मी दिन रात काम करके थक चुके है, कुछ पुलिस कर्मियों की जान चली गई है । आपूर्ति श्रृंखला बाधित हो गई है। उद्योग बंद होने से बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हो गई है। कुछ लोगों ने रोजगार पाने और व्यवसाय शुरू करने की उम्मीद खो दी है।

आज भी कोरोना का कहर लगातार बढ़ता जा रहा है। लेकिन भारत जैसा देश अब तालेबंदी का सहारा नही ले सकना। इसलिये देश लड रहा है रास्ता खोजने की कोशिश कर रहा है लेकिन कोविड-19 महामारी की अचानक शुरूआत से समाज के हर वर्ग पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा है । चुँकि उन सभी पर यहा विचार करना असंभव है। इसलिये वर्तमान लेख बुनियादी मानवीय जरूरतों के संबंध में रोजगार , स्वास्थ्य और शिक्षा के तीन महत्वयपूर्ण सामाजिक कारको पर प्रभावों की समीक्षा करना चाहता है।

अनुसंधान के उद्देश्य

1. रोजगार पर कोविड- 19 के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. प्रवासी मजदूरों पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. स्वास्थ्य संबंधी प्रभावों का अध्ययन करना।
4. शिक्षा क्षेत्र पर प्रभाव का अध्ययन करना।

अनुसंधान की विधिया (पद्धति)

इस लेख के लिये मध्य्िामक समर्थन सामग्री का उपयोग किया गया हो। समाचार पत्र और इंटरनेट मुख्य उपकरण है द्वितीय साधनों के आधार पर विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। इसमें पता चलना है कि कोविड-19 का भारतीय समाज के जीवन पर एक और प्रभाव पड़ा है।

रोजगार पर प्रभाव

हालाकि देश की केन्द्र व राज्य सरकारे कोरोना के प्रसार को रोकने की कोशिश कर रही है लेकिन तालेबंदी का देश में रोजगार, स्वास्थ्य और शिक्षा पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा है। आर बी आई के पूर्व गवर्नर और अर्थशास्त्री रघुराम राजन के कहा कि सबसे ज्यादा नुकसान देश कि गरीबो को हुआ है ताले बंदी के कारण दिहाडी मजदूरों के पास आजीविका का कोई साधन नही था। अन्न, कपडे और निवास की समस्या उनके सामने खड़ी थी। नि.लि. व्यवसाय रोजगार के प्रभावित हुए।

हेयर ड्रेसिंग व्यवसाय

तालेबंदी अवधि के दौरान हेयर ड्रेसिंग व्यवसाय पूरी तरह से बंद था, उनका रोजगार डूब गया। कुछ कारीगारो का मानसिक स्वास्थ्य खराब होने के कारण आत्महत्या कर ली। परिणाम स्वरूप उनके संगठनों ने सरकार के सामने परिवार की आर्थिक मंदद के लिये मांग रखी। लेकिन सरकार यह मांग मानेगी या नही कुछ कह नही सकते। इसके अलावा सेलून में काम करने वाले कई कारीगरों को अपना दिन बेरोजगारी में बिताना पड़ता है।

घरों में काम करने वाली बाई तथा समाचार पत्र बाटने वाले बेरोजगार

मार्च 2019 के तीसरे सप्ताह से हमारे देश के कोरोना संक्रमण शुरू हुआ। एक बार सार्वजनिक तालेबंदी के बाद तीन सप्ताह की तालाबंदी की घोषणा की गई। इस दौरान शहर की महिलाओं ने बर्तन और कपडे धोना और खाना बनाना बंद कर दिया। उनके काम पर आने पर प्रतिबंध लगा दिया जाता है। और समाचार पत्र बाटने वालो का रोजगार भी छिन जाता है। मीडिया में बेरोजगारी को लेकर कोई खबर नही थी। किसी ने भी उनके बेरोजगारी पर ध्यान नही दिया।

रिक्शा चालक की मजबूरी

तालेबंदी के दौरान रिक्शा चालक पूरी तरह से बेरोजगार हो गये। तालेबंदी की छुट के दौरान उनका व्यवसाय तो शुरू हुआ लेकिन रिक्शा में केवल दो यात्री को ही बैठने की अनुमति सामाजिक दूरी के कारण हुई जिससे इनकी आय कम हो गई।

बॉलीवुड चुप

बॉलीवुड जो कि भारत के युवाओं के लिये आकर्षण का केन्द्र है कोरोना काल में उसका कामकाज पूरी तरह से बंद था। पिछले साल 4000 करोड़ रूपये का कारोबार करने वाली बॉलीवुड इस 2019 में लगभग शांत सी हो गई है। उसके अंदर काम करने वाले कलाकार, कर्मचारी बेरोजगार हो गये। देश के सभी सिनेमाघर बंद हो गये। जब तक सिनेमा घर खुलेगे नही, बॉलीवुड अपना व्यवसाय नही कर सकता। उसमें काम करने वाले कलाकार कर्मचारी के लिये रोजगार की बड़ी समस्या उत्पन्न हो गई है।

प्रवासी मजदूरों पर प्रभाव

देश में प्रवासी मजदूरों की वापसी लंबे समय से थी। इस देरी के परिणाम स्वरूप दुनिया भर के मीडिया में देखे गये ये निम्नलिखित परिणाम है।

मजदूर अस्वास्थ्य हो गये

हमारे देश में लगभग 12.5 करोड़ प्रवासी मजदूर है, लॉकडाउन होने पर कम्पनिया बंद हो गई। मजदूरो की नौकरी चली गई, इन मजदूरो के लिये भोजन, वस्त्र व निवास को लेकर समस्या यें उत्पन्न हो गई। क्योंकि जो मजदूर रोज काम करके जीवन यापन करते है। रोजगार छिन जाने पर वे सभी अपने अपने घर जाने को आतुर हो उठे। लॉकडाउन मे रेलगाडिया तथा बसे बंद होने के कारण वे पैदल ही निकल गये। मई व जून के 46 डिग्री के तापमान में सेकड़ो किलोमीटर के अपने बीबी. बच्चों तथा सामान के साथ निकल पड़े। इसके कारण वे स्वास्थ्य हो गये।

मजदूरो की मौत

सरकार ने अधिकांश आकडे जारी नही किये है कि हडताल के दौरान देश के कितने प्रवासी मजदूरो की मौत हुई। हालाकि सोशल मीडिया पर कुछ विशेषज्ञों द्वारा एकत्रित जानकारी के अनुसार देश में 244 प्रवासी मजदूरों की मौत हुई। महाराष्ट्र में जालना से औरगाबाद जा रहे 16 प्रवासी मजदूर जब पैदल चल-चल कर थक गये, तब वे रेल की पटरियों पर ही सो गये सुबह पांच बजे एक मालगाड़ी गुजरी जिनसे उनकी वही पर रेल से कटने के कारण उनकी मृत्यु हो गई। कई लोगों ने समाचार सुना तो वे स्तब्ध हो गये।

कोरोना का संक्रमण बढा

लॉकडाउन के समय प्रवासी मजदूरों को अपने गृहनगर जाने नही दिया। इससे उनके लिये कई समस्याये खड़ी हो गई। उनके पास भोजन या पानी की समस्या उत्पन हो गई। इसलिये वे बेचेन होकर अपने घरों के लिये पैदल ही निकल पडे। गॉव पहुचनें में उन्हाने कई दिने हो गये तथा अपने गॉव पहुचकर उन्होने कोरोना का प्रसार तेजी से किया।

ट्रेन में प्रसुति व मृत्यु

लाखो गैर प्रवासी मजदूरो ने अपने गृह राज्यों में ट्रैन से कई घंटे की यात्रा की। यात्रा के दौरान 37 नवजात शिशुओं का जन्म हुआ। गर्भवती महिलाओ कि रेल्वे ने मदद की। लेकिन ऐसी महिलाओं को अस्पताल मे रहने के बजाय यात्रा करनी पड़ी। कुछ ट्रेन कही और चली गई, कुछ कई घंटे देरी से पहुँची। यात्रा के दौरान करीब 8 व्यक्तियों की मौत हुई, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने भी रेल मंत्रालय की आलोचना की जिम्मेदारी से इनकार किया। ट्रेन में मजदूरों को सही समय पर उपचार नही मिला जिससे वे बिमार हो गये। उस समय संक्रमण शहरों से श्रमिको के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों मे फैल गया।

सुप्रीम कोर्ट को प्रवासी मजदूरों के संबध में दखल देनी पडी

देश में लगभग 12.5 करोड़ प्रवासी मजदूर है। लॉकडाउन के दौरान बेरोजगारी, भोजन, निवास और यात्रा के कारण मजदूरो ने अपनी नौकरी खो दी। अंत में सुप्रीम कोर्ट ने स्वंय इन मजदूरो की दुर्दशा पर ध्यान दिया और केन्द्र व राज्य सरकारों को 9 जून 2020 को 15 दिनों के भीतर प्रवासी मजदूरों

के रहने की व्यवस्था और इन श्रमिकों को रोजगार प्रदान करने की योजना के साथ आने का निर्देश दिया, घर में मजदूरों को रोजगार प्रदान करने और अन्य योजनाओं का लाभ कैसे दिया जाय इस पर स्पष्ट निर्देश दिये। इसका मतलब था कि सुप्रीम कार्ट को प्रवासी मजदूरों की दुर्दशा का संज्ञान लेना था । क्योंकि केन्द्र व राज्य सरकारें उनकी उपेक्षा कर रही थी ।

स्वास्थ्य संबंधी परिणाम

देश के कोनो मे बढते संक्रमण न केवल कोरोना से संक्रमित लोगों के स्वास्थ्य को प्रभावित करते है बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य के अन्य पहलुओं को भी काफी हद तक प्रभावित करते है।

टीकाकरण में देरी

कोरोना काल में ब्मदजमत थ्वत क्पेमंे्म ब्मदजमत ंदक च्तमअमदजपवद संस्था ने पूरे विश्व में सर्वेक्षण के आधार पर बताया कि इस कोरोना संक्रमण काल में माता-पिता ने समय पर अपने बच्चों को टीके नही लगवाये, ये समस्या की बात है कि सर्वेक्षण के दौरान 40: लोगों ने अपने बच्चों की सही समय पर टीके नही लगवाये आने वाले समय में बडी समस्या की बात है।

कैसर के मरीज

कोरोना अवधि के दौरान कैंसर के मरीजो की तरफ डाक्टरों का ध्यान बिल्कुल नही गया था, उन्हे असमय ही अस्पताल से छुट्टी कर दी गई। कई मरीजो को घर जाने में दिक्कात हुई। कोरोना काल में आवागमन के साधन न होने के कारण मरीज कई किलोमीटर पैदल चलने को मजबूर हुए। ऐसे मे किसी सामाजिक संस्था ने स्वायं अपने खर्चे पर इन मरीजो को घर पहुचाया। इस कोरोना काल में कैंसर के मरीजों की शल्य क्रिया भी सही समय पर नहीं हो पाई, जिससे मरीजो को गंभीर परिणाम भुगतने पड़े ।

रोगी की देखभाल

देश में कोरोना का प्रकोप बढता जा रहा है दूसरी लहर अप्रैल में आई काफी लोगों की जाने गई। महाराष्ट्रो, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, में सबसे ज्यादा कोरोना संक्रमित हुए। देश में स्वास्थ्य व्यवस्था चरमरा गई । बेड की कमी, आई सी यू की कमी, आक्सीजन की कमी, देखते बनी, लोग अपने परिजनो को बचाने के लिये मुह मांगे दामो पर इंजेक्शन, बेड, आक्सीजन खरीदते नजर आये, दवाईयो की कालाबाजारी उच्च स्तर पर थी ।

बीमारी एक लेकिन खर्च अलग-अलग और असमान उपचार

कोरोना के मरीजो पर अलग-अलग राज्यों या एक ही राज्य में अलग-अलग लागते ली जा रही है उसी समय असमान उपचार भी चल रहा है, लगता है कि स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा अमीर और गरीब के साथ भेदभाव किया जा रहा है, ऐसी समस्या से निपटने के लिये अस्पातालों मे सी.सी.टी.वी लगाया जाना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कोरोना रोगियो को एक ही कीमत पर उचित उपचार प्राप्त हो ।

सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालिया ध्वस्त हो गई है

देश की सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली अपर्याप्त है क्योकि देश में कोरोना रोगियो की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इसलिये मरीजों को निजी अस्पतालों में इलाज कराना पड रहा है, एक निजी अस्पताल में 25000 रू. से लेकर 15 लाख रूपये तक खर्च करने पडते है, कई अस्पताल में मरीजो के मरने के बाद जल्दी शव इसलिये नही दिये क्योकि उनके पास पर्याप्त रूपये नही थे।

शिक्षा क्षेत्र पर प्रभाव

हालाकि कोरोना संक्रमण फेलने के कारण पूरा शिक्षा क्षेत्र ध्व स्त् हो गया है । हालाकि पारम्पारिक शिक्षण और मूल्यांणकन प्रणाली स्नावतक और स्ना.तकोत्तर परीक्षाओं को लेने के लिये लगभग दो महीने लग गये । विश्वूविद्यालय यह भी तय नही कर पाये कि परिक्षाये व्ि सपदम डवकम मे ले या व्दसपदम डवकम में । अंतिम वर्ष की परीक्षाये का निर्णय लेने मे भी काफी समय लग गया । कुछ छात्रों ने यह सवाल उठाया कि अगर अन्यक शाखाओं के छात्र परीक्षा दिये बिना परीक्षा पास कर लेते है तो हमे परीक्षा क्यों देनी चाहिए, अंत में छात्र वर्ग असमंजस में था कि परीक्षाये होगी या नही ।

स्कूलों और अभिभावकों में शिक्षा

स्कूलों और कालेजों में शिक्षा के लिये विकल्प में से एक ऑनलाईन शिक्षा शुरू करना है क्यों कि कोरोना संक्रमण बढ रहा है। छात्रों के लिये ऑनलाइन शिक्षा भी शुरू हुई। माता-पिता के पास ऑनलाइन शिक्षा के लिए पर्याप्त साधन है या नही इसकी परवाह किये बगेर स्कूल संचालक ने फीस वसुलनी शुरू कर दी ।

कोविड -19 प्रवास और आर्थिक संकट के परिणाम:

1. कोविड-19 के कारण बडे पैमाने पर लोगों का आवागमन हुआ जिससे कारण देश की अर्थव्यवस्था लडखडा गई ।
2. शहरो से मजदूर वर्ग गावों मे स्थानांतरित हो गया इस कारण ग्रामीण आबादी में वृद्धि हुई ।
3. कुशल श्रमिक ग्रामीण क्षेत्रों में जा रहे है जिससे औद्योगिक क्षेत्र को नुकसान हो रहा है।
4. शहरो से गावो के मजदूरो के चले जाने से शहरो में मजदूरो का संकट उत्प न हो गया है।

निष्कर्ष

उपरोक्ता कोविड -19 के कारण भारतीय सामाजिक जीवन पर कारण और प्रभावो का वर्णन किया है । यह देश मे और साथ ही देश की अर्थव्यिवस्थां में आये बदलावो की व्याख्या करता है । प्रस्तीवना के माध्यंम से विचार पृष्ठ भूमि वास्तकविकता के माध्यहम से प्रक्रिया और कारण और परिणामों के माध्य म से प्रतिकुल परिवर्तनों को समझाया गया है। कोविड-19 से आवागमन (प्रवास) और वित्ती य संकट का सामना देश कर रहा है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *दैनिक न्यूज पेपर-दैनिक भास्ककर समाचार पत्र ।*
2. *दैनिक न्यूज पेपर - नई दुनिया समाचार पत्र ।*
3. *दैनिक न्यूज पेपर - दैनिक जागरण समाचार पत्र ।*
4. *दैनिक न्यूज पेपर - जनसत्ताा समाचार पत्र ।*
5. *मासिक पत्रिका - आउटलुक 2019, 2020 ।*
6. *दैनिक न्यूज पेपर- सागर आचरण समाचार पत्र ।*